Joshe Imani (Hindi)

जोशे ईमानी

शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादिरी र-ज़वी دامت برکاتہم العالیہ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَکَاتُھُمُ الْعَالِیَہ

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ़ येह है :

اَللّٰھُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़-ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (اَلْمُستطرَف ج۱ ص۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

जोशे ईमानी

येह रिसाला **(जोशे ईमानी)**

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَکَاتُھُمُ الْعَالِیَہ ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक-त-बतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ई-मेइल या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)
मक-त-बतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात
MO. 9374031409 E-mail : translationmaktabhind@dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

जोशे ईमानी[1]

गा़लिबन आप को शैता़न येह रिसाला (23 सफ़ह़ात) पूरा नहीं पढ़ने देगा मगर आप कोशिश कर के पूरा पढ़ कर शैता़न के वार को नाकाम बना दीजिये ।

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

"**सआदतुद्दारैन**" में है, ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अ़ली बिन अ़ति़य्या رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : मैं ने ख़्वाब में जनाबे रिसालत मआब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का दीदार किया तो अ़र्ज़ की : **सरकार !** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم आप की शफ़ाअ़त का त़लब गार हूं । सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : **اَکْثِرُ مِنَ الصَّلٰوۃِ عَلَیَّ** या'नी "मुझ पर कसरत के साथ दुरूदे पाक पढ़ा करो ।" **(سعادۃُ الدّارَین ص۱۳۷)**

का'बे के बदरुद्दुजा तुम पे करोड़ों दुरूद
त़यबा के शम्सुद्दुह़ा तुम पे करोड़ों दुरूद

(ह़दाइके़ बख़्शिश शरीफ़, स. 364)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

---

1 : येह बयान **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَه ने तब्लीगे़ कु़रआनो सुन्नत की आ़लमगीर गै़र सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के तीन रोज़ा बैनल अक़्वामी सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ (2,3,4 र-जबुल मुरज्जब 1419 सि.हि. मदीनतुल औलिया मुलतान) की आख़िरी निशस्त में फ़रमाया । तरमीम व इज़ाफ़े के साथ तह़रीरन ह़ाज़िरे ख़ि़दमत है ।
-मजलिसे मक-त-बतुल मदीना

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पर दस रह़मतें भेजता है । (مسلم)

म–दनी मुन्ने का जोशे ईमानी

रात का पिछला पहर था, सारे का सारा मदीना नूर में डूबा हुवा था । **अहले मदीना** रह़मत की चादर ओढ़े मह़्वे ख़्वाब थे, इतने में **मुअज़्ज़िने रसूलुल्लाह** ह़ज़रते सय्यिदुना बिलाले ह़बशी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की पुरकैफ़ सदा **मदीनए मुनव्वरह** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا की गलियों में गूंज उठी : ''**आज** नमाज़े फ़ज्र के बा'द मुजाहिदीन की फ़ौज एक अ़ज़ीम मुहिम पर रवाना हो रही है । **मदीनए मुनव्वरह** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا की मुक़द्दस बीबियां अपने शहज़ादों को जन्नत का दूल्हा बना कर फ़ौरन दरबारे रिसालत में ह़ाज़िर हो जाएं ।'' **एक** बेवा सह़ाबिया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا अपने **छ6 सालह** यतीम शहज़ादे को पहलू में लिटाए सो रही थीं । ह़ज़रते सय्यिदुना **बिलाल** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का ए'लान सुन कर चौंक पड़ीं ! दिल का ज़ख़्म हरा हो गया, यतीम बच्चे के वालिदे गिरामी गुज़श्ता बरस **ग़ज़्वए बद्र** में शहीद हो चुके थे । एक बार फिर श–जरे इस्लाम की आब–यारी के लिये ख़ून की ज़रूरत दरपेश थी मगर इन के पास **छ6 सालह म–दनी मुन्ने** के इ़लावा कोई और न था । सीने में थमा हुवा तूफ़ान आंखों के ज़रीए़ उमंड आया । आहों और सिस्कियों की आवाज़ से **म–दनी मुन्ने** की आंख खुल गई, मां को रोता देख कर बे क़रार हो कर कहने लगा : मां ! क्यूं रोती हो ? मां **म–दनी मुन्ने** को अपने दिल का दर्द किस त़रह़ समझाती ! उस के रोने की आवाज़ मज़ीद तेज़ हो गई । मां की गिर्या व ज़ारी के तअस्सुर से **म–दनी मुन्ना** भी रोने लग गया । मां ने **म–दनी मुन्ने** को बहलाना शुरूअ़ किया, मगर वोह मां का दर्द जानने के लिये बज़िद था । आख़िर कार मां ने अपने जज़्बात पर ब कोशिश तमाम

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े । (ترمذی)

क़ाबू पाते हुए कहा : बेटा ! अभी अभी ह़ज़रते सय्यिदुना **बिलाल** رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡہُ ने ए'लान किया है : मुजाहिदीन की फ़ौज मैदाने जंग की त़रफ़ रवाना हो रही है । **आक़ाए नामदार** صَلَّی اللّٰہُ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने जां निसार त़लब फ़रमाए हैं । कितनी बख़्त बेदार हैं वोह माएं जो आज अपने नौ जवान शहज़ादों का नज़राना लिये दरबारे रिसालत में ह़ाज़िर हो कर अश्कबार आंखों से इल्तिजाएं कर रही होंगी : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! हम अपने जिगर पारे आप के क़दमों पर निसार करने के लिये लाई हैं, **आक़ा !** हमारे अरमानों की ह़क़ीर क़ुरबानियां क़बूल फ़रमा लीजिये, **सरकार !** उ़म्र भर की मेह़नत वुसूल हो जाएगी । इतना कह कर मां एक बार फिर रोने लगी और भर्राई हुई आवाज़ में कहा : **काश !** मेरे घर में भी कोई जवान बेटा होता और मैं भी अपना नज़रानए शौक़ ले कर **आक़ा** की बारगाह में ह़ाज़िर हो जाती । म-दनी मुन्ना मां को फिर रोता देख कर मचल गया और अपनी मां को चुप करवाते हुए **जोशे ईमानी** के जज़्बे के साथ कहने लगा : मेरी प्यारी मां ! मत रो, मुझी को पेश कर देना । मां बोली : **बेटा !** तुम अभी कमसिन हो, मैदाने कारज़ार में दुश्मनाने ख़ूंख़ार से पाला पड़ता है, तुम तलवार की काट बरदाश्त नहीं कर सकोगे । **म-दनी मुन्ने** की ज़िद के सामने बिल आख़िर मां को हथियार डालने ही पड़े । नमाज़े फ़ज्र के बा'द **मस्जिदुन्न-बविय्यिश्शरीफ़** عَلٰی صَاحِبِہَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के बाहर मैदान में मुजाहिदीन का हुजूम हो गया । उन से फ़ारिग़ हो कर **सरकारे मदीना** صَلَّی اللّٰہُ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم वापस तशरीफ़ ला ही रहे थे कि एक पर्दा पोश ख़ातून पर नज़र पड़ी जो

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **:** जो मुझ पर दस मरतबा दुरूदे पाक पढ़े **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उस पर सो रह़मतें नाज़िल फ़रमाता है । (طبرانی)

अपने छ[6] सालह म-दनी मुन्ने को लिये एक त़रफ़ खड़ी थी । शाहे शीरीं मक़ाल, साहि़बे जूदो नवाल, शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, मह़बूबे रब्बे ज़ुल जलाल, आक़ाए बिलाल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने **ह़ज़रते सय्यिदुना बिलाल** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ को आमद का सबब दरयाफ़्त करने के लिये भेजा । **सय्यिदुना बिलाल** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने क़रीब जा कर निगाहें झुकाए आने की वजह दरयाफ़्त की । ख़ातून ने भर्राई हुई आवाज़ में जवाब दिया **:** आज रात के पिछले पहर आप ए'लान करते हुए मेरे ग़रीब ख़ाने के क़रीब से गुज़रे थे, ए'लान सुन कर मेरा दिल तड़प उठा । आह ! मेरे घर में कोई नौ जवान नहीं था जिस का नज़रानए शौक़ ले कर ह़ाज़िर होती फ़क़त़ मेरी गोद में येही एक **छ[6] सालह यतीम बच्चा** है जिस के वालिद गुज़श्ता साल **ग़ज़्वए बद्र** में जामे शहादत नोश कर चुके हैं मेरी ज़िन्दगी भर की पूंजी येही एक बच्चा है, जिसे **सरकारे आ़ली वक़ार** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के क़दमों पर निसार करने के लिये लाई हूं । **ह़ज़रते सय्यिदुना बिलाल** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने प्यार से **म-दनी मुन्ने** को गोद में उठा लिया और बारगाहे रिसालत में पेश करते हुए सारा माजरा अ़र्ज़ किया । **सरकार** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने **म-दनी मुन्ने** पर बहुत शफ़्क़त फ़रमाई । मगर कमसिनी के सबब मैदाने जिहाद में जाने की इजाज़त न दी । (माख़ूज़ अज़ : ज़ुल्फ़ो ज़न्जीर, स. 222) **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो ।**

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

दुन्या के लिये तो वक़्त है मगर.....

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने म-दनी मुन्ने का **जोशे ईमानी ! अल्लाह ! अल्लाह !** पहले की माएं **अल्लाह व रसूल** عَزَّوَجَلَّ وصَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم और दीने इस्लाम से किस क़दर वालिहाना मह़ब्बत करती थीं । जो लोग अपने जिगर पारों को बे वफ़ा दुन्या की दौलत के ह़ुसूल की ख़ातिर अपने शह़र से दूसरे शह़र बल्कि दूसरे मुल्क तक में और वोह भी बरसों के लिये भेजने के लिये तय्यार हो जाते हैं मगर अपने ही शह़र में होने वाले **दा'वते इस्लामी** के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में थोड़ी देर के लिये भी जाने से रोक देते हैं, सुन्नतों की तरबिय्यत की ख़ातिर म-दनी क़ाफ़िलों में आ़शिक़ाने रसूल के हमराह चन्द रोज़ सफ़र करने से मानेअ़ होते हैं, उन को इस **ईमान अफ़रोज़ ह़िकायत** से दर्से इ़ब्रत ह़ासिल करना चाहिये । **आह !** हम थोड़े से वक़्त की क़ुरबानी देने से भी कतराते हैं और हमारे अस्लाफ़ अपना जान व माल सब कुछ **राहे ख़ुदा** عَزَّوَجَلَّ में क़ुरबान करने के लिये हर पल तय्यार रहते थे ।

थे तो आबा वोह तुम्हारे ही मगर तुम क्या हो
हाथ पर हाथ धरे मुन्तज़िरे फ़र्दा[1] हो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

مدینہ

1 : फ़र्दा : या'नी आने वाला दिन ।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर सुब्ह़ व शाम दस दस बार दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअ़त मिलेगी। (مجمع الزوائد)

चार शहीदों की मां

उस्दुल ग़ाबह जिल्द 7 सफ़ह़ा 100 पर है : **जंगे क़ादिसिया** (जो अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ के दौरे ख़िलाफ़त में लड़ी गई थी) में ह़ज़रते सय्यि-दतुना ख़न्साअ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا चारों शहज़ादों समेत शरीक हुई थीं। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا ने जंग से एक रोज़ क़ब्ल अपने **चारों शहज़ादों** को इस त़रह़ नसीह़त फ़रमाई : "मेरे प्यारे बेटो ! तुम अपनी ख़ुशी से मुसल्मान हुए और अपनी ही ख़ुशी से तुम ने हिजरत की, उस ज़ात की क़सम ! जिस के सिवा कोई मा'बूद नहीं, तुम एक ही मां बाप की औलाद हो, मैं ने तुम्हारे नसब को ख़राब नहीं किया, तुम्हें मा'लूम है कि **अल्लाहु ग़फ़्फ़ार** عَزَّوَجَلَّ ने कुफ़्फ़ार से मुक़ाबला करने में मुजाहिदीन के लिये अ़ज़ीमुश्शान सवाब रखा है। **याद रखो !** आख़िरत की बाक़ी रहने वाली ज़िन्दगी दुन्या की फ़ना होने वाली ज़िन्दगी से ब द-र-जहा बेहतर है। **सुनो ! सुनो !** क़ुरआने पाक के पारह 4 **सू-रतु आले इमरान** की आयत नम्बर 200 में इर्शाद होता है :

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوا اصۡبِرُوۡا وَصَابِرُوۡا وَرَابِطُوۡا ۟ وَاتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمۡ تُفۡلِحُوۡنَ ﴿۲۰۰﴾

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो ! सब्र करो और सब्र में दुश्मनों से आगे रहो और सरहद पर इस्लामी मुल्क की निगहबानी करो और **अल्लाह** से डरते रहो, इस उम्मीद पर कि काम्याब हो।

सुब्ह़ को बड़ी होशियारी के साथ जंग में शिर्कत करो और दुश्मनों के मुक़ाबले में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से मदद त़लब करते हुए आगे बढ़ो

और जब तुम देखो कि लड़ाई ज़ोर पर आ गई और इस के शो'ले भड़क्ने लगे हैं तो उस शो'लाज़न आग में कूद जाना, काफ़िरों के सरदार का मुक़ाबला करना, اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ इ़ज़्ज़तो इक्राम के साथ जन्नत में रहोगे।" जंग में ह़ज़रते सय्यि-दतुना ख़न्साअ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के **चारों शहज़ादों** ने बढ़ चढ़ कर कुफ़्फ़ार का मुक़ाबला किया और यके बा'द दीगरे जामे शहादत नोश कर गए। जब उन की वालिदए मोह़-त-रमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को उन की शहादत की ख़बर पहुंची तो उन्हों ने बजाए वावेला मचाने के कहा : **उस प्यारे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का शुक्र है जिस ने मुझे चार शहीद बेटों की मां बनने का शरफ़ अ़ता फ़रमाया। मुझे अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त की रह़मत से उम्मीद है कि मैं भी उन चारों शहीदों के साथ जन्नत में रहूंगी।** (اُسْدُ الْغابَۃ فِی مَعْرِفَۃِ الصَّحابَۃ ج۷ ص۱۰۰-۱۰۱)

ग़ुलामाने मुह़म्मद जान देने से नहीं डरते
येह सर कट जाए या रह जाए कुछ परवा नहीं करते

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

गुफ़्तार के ग़ाज़ी

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आख़िर वोह कौन सा जज़्बा था जिस ने हर मर्द व औ़रत बल्कि बच्चे बच्चे को इस्लाम का शैदाई बना दिया था। वोह कामिलुल ईमान मोमिन थे, वोह **जोशे ईमानी** के जज़्बे से सरशार थे और आह ! आज का मुसल्मान अक्सर कमज़ोरिये ईमान

का शिकार है। उन के पेशे नज़र हर दम **अल्लाह व रसूल** عَزَّوَجَلَّ وصَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم की रिज़ा हुवा करती थी मगर **हाए अफ़्सोस !** आज के मुसल्मानों की अक्सरिय्यत की अब इस त़रफ़ कोई तवज्जोह नहीं। वोह **अल्लाह व रसूल** عَزَّوَجَلَّ وصَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم की महब्बत से सरशार थे और **वाए बद नसीबी !** आज के मुसल्मानों की भारी अक्सरिय्यत दुन्या की महब्बत में मुस्तग़रक़ है। वोह आ'ला किरदार के मालिक हुवा करते थे मगर आज के अक्सर मुसल्मान फ़क़त् **गुफ़्तार** (या'नी बातों) **के ग़ाज़ी** बन कर रह गए हैं। आह ! सद हज़ार आह ! हम ने दुन्या की महब्बत में डूब कर, **रिज़ाए इलाही** के कामों से दूर हो कर, अपनी ज़िन्दगियों को गुनाहों से आलूद कर के, अपने **मीठे मीठे आक़ा** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की प्यारी प्यारी **सुन्नतों** के सांचे में ख़ुद को ढालने के बजाए अग़्यार के फ़ेशन को अपना कर अपनी ह़ालत ख़ुद आप बिगाड़ डाली है। पारह 13 **सू-रतुर्रा'द** की ग्यारहवीं आयत में इर्शाद होता है :

اِنَّ اللّٰهَ لَا يُغَيِّرُ مَا بِقَوْمٍ حَتّٰى يُغَيِّرُوْا مَا بِاَنْفُسِهِمْ ؕ

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : बेशक **अल्लाह** किसी क़ौम से अपनी ने'मत नहीं बदलता जब तक वोह ख़ुद अपनी ह़ालत न बदल दें।

अफ़्सोस ! सद हज़ार अफ़्सोस ! बे अ़-मली के सबब हम ज़िल्लतो रुस्वाई के अ़मीक़ गढ़े में निहायत ही तेज़ी के साथ गिरते चले जा रहे हैं। एक वक़्त वोह था जब कुफ़्फ़ार मुसल्मान के नाम से लरज़ा बर अन्दाम हो जाया करते थे और आज इन्क़िलाबे मा'कूस ने मुसल्मानों को कुफ़्फ़ार से ख़ौफ़ज़दा कर रखा है।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा उस ने जन्नत का रास्ता छोड़ दिया। (طبرانی)

उम्मत पे तेरी आ के अ़जब वक़्त पड़ा है
ऐ ख़ासए ख़ासाने रुसुल वक़्ते दुआ़ है

परदेस में वोह आज ग़रीबुल गु-रबा है
जो दीन बड़ी शान से निकला था वत़न से

ख़ुद आज वोह मेहमान सराए फु-क़रा है
जिस दीन के मद्ऊ़ थे कभी क़ैसरो किस्रा

अब उस की मजालिस में न बत्ती न दिया है
वोह दीन हुई बज़्मे जहां जिस से फ़रूज़ां

अब मो'तरिज़ उस दीन पे हर हर ज़ह सरा है
जिस दीन की हुज्जत से सब अद्यान थे मग़्लूब

प्यारों में महब्बत है न यारों में वफ़ा है
छोटों में इत़ाअ़त है न शफ़्क़त है बड़ों में

पर नाम तेरी क़ौम का यां अब भी बड़ा है
गो क़ौम में तेरी नहीं अब कोई बड़ाई

मुद्दत से इसे दौरे ज़मां मैट रहा है
डर है कहीं येह नाम भी मिट जाए न आख़िर

वोह याद में अस्लाफ़ के अब रू ब क़ज़ा है
वोह क़ौम कि आफ़ाक़ में जो सर ब फ़लक थी

अब इ़ल्म का वां नाम न ह़िक्मत का पता है
जो क़ौम कि मालिक थी उ़लूम और ह़िकम की

गुम दश्त में इक क़ाफ़िला बे त़-बलो दरा है
खोज उन के कमालात का लगता है अब इतना

शिक्वा है ज़माने का न क़िस्मत का गिला है
जो कुछ हैं वोह सब अपने ही हाथों के हैं करतूत

सच है कि बुरे काम का अन्जाम बुरा है
देखे हैं येह दिन अपनी ही ग़फ़्लत की बदौलत

बेड़ा येह तबाही के क़रीब आन लगा है
फ़रियाद है ! ऐ कश्तिये उम्मत के निगहबां !

दुन्या पे तेरा लुत़्फ़ सदा आ़म रहा है
ऐ चश्मए रह़मत بِاَبِیْ اَنْتَ وَ اُمِّی

जब तूने किया नेक सुलूक उन से किया है
जिस क़ौम ने घर और वत़न तुझ से छुड़ाया

हर बाग़ी व सरकश का सर आख़िर को झुका है
सो बार तेरा देख के अ़फ़्व और तरह़्हुम

आ'दा से ग़ुलामों को कुछ उम्मीद सिवा है
बरताव तेरे जब कि येह आ'दा से हैं अपने

ख़त़रों में बहुत इस का जहाज़ आ के घिरा है
कर ह़क़ से दुआ़ उम्मते मर्ह़ूम के ह़क़ में

दिलदादा तेरा एक से एक इन में सिवा है
उम्मत में तेरी नेक भी हैं बद भी हैं लेकिन

वोह तेरी महब्बत तेरी इ़तरत की विला है
ईमां जिसे कहते हैं अ़क़ीदे में हमारे

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत करो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे लिये पाकीज़गी का बाइस है। (ابویعلی)

जो ख़ाक तेरे दर पे है जारूब से उड़ती — वोह ख़ाक हमारे लिये दारूए शिफ़ा है
जो शह्र हुवा तेरी विलादत से मुशर्रफ़ — अब तक वोही क़िब्ला तेरी उम्मत का रहा है
जिस शह्र ने पाई तेरी हिजरत से सआ़दत — मक्के से कशिश उस की हर इक दिल में सिवा है
कल देखिये पेश आए ग़ुलामों को तेरे क्या — अब तक तो तेरे नाम पे एक एक फ़िदा है
हम नेक हैं या बद हैं फिर आख़िर हैं तुम्हारे — निस्बत बहुत अच्छी है अगर ह़ाल बुरा है
तदबीर संभलने की हमारे नहीं कोई — हां एक दुआ़ तेरी कि मक़्बूले ख़ुदा है

ख़ुद जाह के त़ालिब हैं न इ़ज़्ज़त के हैं ख़्वाहां
पर फ़िक्र तेरे दीन की इ़ज़्ज़त की सदा है

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

एह़सासे ज़िम्मादारी पैदा कीजिये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! निहायत ही सन्जी-दगी के साथ अपने किरदार का जाएज़ा लीजिये। अपने गुनाहों से सच्ची तौबा कीजिये और अपने अन्दर अज़् सरे नौ **जोशे ईमानी** पैदा कीजिये और येह म-दनी सोच बनाइये कि **मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है,** اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ । अगर आप ने अपनी ज़िम्मादारी को समझ कर **अल्लाह व रसूल** عَزَّوَجَلَّ وصَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم की मह़ब्बत में डूब कर इस म-दनी काम का बीड़ा उठा[1] लिया तो **अल्लाह व रसूल** عَزَّوَجَلَّ وصَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم के प्यार की ब-र-कत से اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ आप का दोनों जहां में बेड़ा पार होगा।

हम को अल्लाह और नबी से प्यार है
اِنْ شَآءَاللّٰه ***अपना बेड़ा पार है***

(वसाइले बख़्शिश, स. 600)

1 : बीड़ा उठाना : या'नी आमादा होना।

म-दनी क़ाफ़िले में शिफ़ा भी मिली और दीदार भी हुवा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ **दा'वते इस्लामी** के सुन्नतों की तरबिय्यत के म-दनी क़ाफ़िलों में **आ़शिक़ाने रसूल** की सोह़बत की ब-र-कत से दुन्या व आख़िरत की ऐसी ऐसी सआ़दतें मिलती हैं कि न पूछो बात। आप की तरग़ीब के लिये एक म-दनी बहार आप के गोश गुज़ार करता हूं चुनान्चे पाकिस्तान के सूबा पंजाब के एक इस्लामी भाई का बयान है : मैं दा'वते इस्लामी के आ़लमी म-दनी मर्कज़ **फ़ैज़ाने मदीना** (बाबुल मदीना कराची) में ''तरबिय्यती कोर्स'' के लिये आया हुवा था, इस दौरान एक दिन जुमा'रात को सुब्ह़ तक़रीबन चार बजे पेट की बाईं जानिब अचानक दर्द उठा, दर्द इस क़दर शदीद था कि सात इन्जेक्शन लगे तब आराम आया, ह़स्बे मा'मूल जुमा'रात को होने वाले **सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** के लिये (म-दनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना) में शाम को ह़ाज़िर हुवा। रात दस बजे फिर दर्द शुरूअ़ हुवा मगर इज्तिमाअ़ में मांगी जाने वाली **इज्तिमाई दुआ़** के वक़्त ठीक हो गया, एक घन्टा के बा'द फिर बहुत शदीद दर्द उठा। डॉक्टर ने **तीन** इन्जेक्शन लगाए फिर कुछ इफ़ाक़ा हुवा। अब ह़ालत येह हो गई कि जब भी खाना खाता दर्द शुरूअ़ हो जाता। रोज़ाना तीन चार टीके लगते। ड्रिप चढ़ती, अल्ट्रा साउन्ड भी करवाया, मगर डॉक्टरों को दर्द का सबब समझ में न आया। मैं अस्पताल में पड़ा था वहां मुझे मा'लूम हुवा कि मेरे साथ वाले इस्लामी भाई सुन्नतों की तरबिय्यत के **म-दनी क़ाफ़िले** में **12** दिन के लिये सफ़र की तय्यारी कर रहे हैं, डॉक्टर ने सफ़र से बहुतेरा रोका मगर मुझ से न रहा गया मैं **डेरा बुगटी** (बलोचिस्तान) जाने वाले **म-दनी क़ाफ़िले** का मुसाफ़िर बन गया। डेरा बुगटी जाते हुए रास्ते में थोड़ा सा दर्द हुवा,

फिर वहां से हम ने "सूई" आ कर जुमा'रात के **सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** में शिर्कत की और फिर डेरा बुगटी वापस आ गए । اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ **म-दनी क़ाफ़िले** की ब-र-कत से दर्द ऐसा दूर हुवा गोया कभी था ही नहीं और اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ता ह़ाल मुझे दोबारा वोह तक्लीफ़ नहीं हुई और सब से बड़ी सआ़दत येह मिली कि **मुझे म-दनी क़ाफ़िले में ख़्वाब के अन्दर मदीने के ताजदार** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **का दीदार हो गया ।**

लूटने रह़मतें क़ाफ़िले में चलो सीखने सुन्नतें क़ाफ़िले में चलो
दर्दे सर हो अगर दुख रही हो कमर दर्द दोनों मिटें, क़ाफ़िले में चलो
है त़लब दीद की, दीद की ईद की क्या अ़जब वोह दिखें क़ाफ़िले में चलो

सुल्त़ाने दो जहां صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की क़ुरबानियां

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये आप को अपने अन्दर क़ुरबानी का जज़्बा पैदा करना होगा । बिग़ैर क़ुरबानी पेश किये कुछ नहीं हो सकता । **हमारे** प्यारे प्यारे और मीठे मीठे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस्लाम की ख़ात़िर कैसी कैसी क़ुरबानियां पेश कीं इस का तसव्वुर ही लरज़ा देने के लिये काफ़ी है । राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में हमारे मक्की म-दनी आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को बेह़द सताया गया, आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की राहों में **कांटे** बिछाए गए, आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर **पथ्थर** बरसाए गए, ह़त्ता कि क़ुफ़्फ़ारे बद अत़्वार आप को **शहीद** करने के भी दरपै रहे मगर हमारे प्यारे प्यारे आक़ा और मीठे मीठे **मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हिम्मत न हारे । आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मुसल्सल जिद्दो जुहद रंग लाई, जो लोग दुश्मन थे वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्लो करम से दोस्त बन गए, जो जान के दरपै थे वोह जानें क़ुरबान

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **:** जो लोग अपनी मजलिस से **अल्लाह** के ज़िक्र और नबी पर दुरूद शरीफ़ पढ़े बिगैर उठ गए तो वोह बदबूदार मुर्दार से उठे। (شعب الایمان)

करने लगे, जो दूसरों को मुसल्मान होने से रोकते थे वोह ख़ुद मुसल्मान हो कर दूसरों को मुसल्मान करने की कोशिशों में मसरूफ़ हो गए। اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ आज सारी दुन्या में जो **इस्लाम की बहारें** हैं वोह **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** की इनायत से प्यारे **मुस्तफ़ा** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मसाइये जमीला और आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की अ़ज़ीम तरबिय्यत से **सहाबए किराम** عَلَیْهِمُ الرِّضْوَان की कुरबानियों का नतीजा है।

हक़ की राह में पथ्थर खाए ख़ूं में नहाए ताइफ़ में
दीन का कितनी मेहनत से काम आप ने ऐ सुल्तान किया

(वसाइले बख़्शिश, स. 388)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

भलाई की बातें सिखाने की फ़ज़ीलत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आप भी नेकी की दा'वत की ख़ातिर कुरबानियों के लिये कमर बस्ता हो जाइये और ढेरों सवाब कमाइये। इमाम अबू नुऐम अहमद बिन **अ़ब्दुल्लाह** अस्फ़हानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی (मु-तवफ़्फ़ा 430 हिजरी) ''हिल्यतुल औलिया'' में नक़्ल करते हैं, **अल्लाह तबा-र-क व तआ़ला** ने हज़रते सय्यिदुना मूसा **कलीमुल्लाह** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की तरफ़ वहूय फ़रमाई : ''**भलाई की बातें ख़ुद भी सीखो और दूसरों को भी सिखाओ, मैं भलाई सीखने और सिखाने वालों की क़ब्रों को रोशन फ़रमाऊंगा ताकि उन को किसी क़िस्म की वहशत न हो।**'' (حلیۃ الاولیاء ج٦ ص٥ رقم ٧٦٢٢)

मुबल्लिग़ीन की क़ब्रें اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ जग-मगाएंगी

इस रिवायत से नेकी की बात सीखने सिखाने का अज्रो सवाब मा'लूम हुवा। **सुन्नतों भरा बयान** करने या **दर्स** देने और सुनने वालों

के तो वारे ही न्यारे हो जाएंगे, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ उन की क़ब्रें अन्दर से जगमग जगमग कर रही होंगी और उन्हें किसी क़िस्म का ख़ौफ़ महसूस नहीं होगा । **इन्फ़िरादी कोशिश** करते हुए **नेकी की दा'वत** देने वालों, **म-दनी क़ाफ़िले** में सफ़र और **फ़िक्रे मदीना** कर के **म-दनी इन्आ़मात** का रिसाला रोज़ाना पुर करने की तरग़ीब दिलाने वालों और **सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** की दा'वत पेश करने वालों नीज़ मुबल्लिग़ीन की **नेकी की दा'वत** को सुनने वालों की क़ुबूर भी اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ **हुज़ूर मुफ़ीज़ुन्नूर** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के नूर के सदक़े नूरुन अ़ला नूर होंगी ।

क़ब्र में लहराएंगे ता ह़श्र चश्मे नूर के
जल्वा फ़रमा होगी जब त़ल्अ़त रसूलुल्लाह की

(ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़, स. 152)

जन्नत में दाख़िला और गुज़श्ता गुनाहों का कफ़्फ़ारा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! कितने ख़ुश नसीब हैं वोह इस्लामी भाई जो इ़ल्मे दीन सीखने की निय्यत से **म-दनी क़ाफ़िलों** में सफ़र करते हैं उन के लिये जन्नत में दाख़िले और गुज़श्ता गुनाहों के कफ़्फ़ारे की बिशारत है । इस ज़िम्न में दो रिवायात सुनिये और झूमिये :

﴾1﴿ **ह़ज़रते** सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से मरवी है : **مَنْ غَدَا وَ رَاحَ وَ هُوَ فِیْ تَعْلِیْمِ دِیْنِهٖ فَهُوَ فِی الْجَنَّةِ** या'नी "जो अपने दीन का इ़ल्म सीखने के लिये सुब्ह़ को चला या शाम को चला वोह **जन्नती** है ।" (حِلْیَةُ الْاَوْلِیَاء ج۷ص۲۹۵، التّیسیر بشرح الْجامِع الصَّغِیر لِلْمُناوِی ج ۲ ص ٤٣٢)

﴾2﴿ "जो शख़्स इ़ल्म की त़लब करता है, तो वोह उस के **गुज़श्ता गुनाहों का कफ़्फ़ारा** हो जाता है ।" (تِرْمِذِی ج٤ ص٢٩٤ حدیث ٢٦٥٧)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

हुसूले दुन्या के लिये सफ़र.......

गौर तो फ़रमाइये ! लोग आमदनी की ज़ियादती के लिये अपने शहर से दूसरे शहर, अपने मुल्क से दूसरे मुल्क जा पड़ते हैं और मां बाप, बाल बच्चों वग़ैरा से बरसों दूर पड़े रहते हैं। **आह !** आज हुसूले दुन्या की ख़ातिर अक्सर लोग हर तरह की कुरबानियां दे रहे हैं मगर इस क़दर अज़ीमुश्शान अज्रो सवाब की बिशारतों के बा वुजूद राहे खुदा عَزَّوَجَلَّ में चन्द रोज़ के लिये भी **म-दनी क़ाफ़िले** में सफ़र करने को तय्यार नहीं होते।

एक त़रफ़ सहाबा का किरदार दूसरी त़रफ़ हम ग़फ़्लत शिआर

ज़रा सोचिये तो सही ! सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने राहे खुदा के हर सफ़र में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया ख़्वाह वोह दुश्मनों के मुक़ाबले में क़िताल (या'नी जंग) का मुआ-मला हो या इल्मे दीन सीखना सिखाना मक़्सूद हो। येह उन्हीं की कुरबानियों का सदक़ा है जो आज दुन्या में हर त़रफ़ दीने इस्लाम की बहारें हैं, बहर ह़ाल एक त़रफ़ तो सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان हैं जिन की ज़िन्दगियां **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के दीन की सर बुलन्दी के लिये वक़्फ़ थीं और दूसरी त़रफ़ हम ग़ाफ़िल लोग हैं जिन के शबो रोज़ सिर्फ़ और सिर्फ़ दुन्या ही की तरक़्क़ी के लिये गोया वक़्फ़ हैं। **आह ! सद करोड़ आह !**

वाइज़े क़ौम की वोह पुख़्ता ख़याली न रही ! बर्क़े तब्ई न रही, शो'ला मक़ाली न रही
रह गई रस्मे अज़ां, रूहे बिलाली न रही फ़ल्सफ़ा रह गया, तल्क़ीने ग़ज़ाली न रही

मस्जिदें मरसिया ख़्वां हैं कि नमाज़ी न रहे
या'नी वोह साह़िबे औसाफ़ हिजाज़ी न रहे

हर मुसल्मां रगे बातिल के लिये निश्तर था उस के आईनए हस्ती में अ़मल जौहर था
जो भरोसा था उसे तो फ़क़त अल्लाह पर था है तुम्हें मौत का डर, उस को खुदा का डर था

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم **:** मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़्फ़िरत है। (ابن عساکر)

बाप का इल्म न बेटे को अगर अज़्बर हो !
फिर पिसर क़ाबिले मीरासे पिदर क्यूंकर हो !

हर कोई मस्ते मए ज़ौक़े तन आसानी है कैसा भाई ! तेरा अन्दाज़े मुसल्मानी है ?
हैदरी फ़क़्र है, ने दौलते उ़स्मानी है तुम को अस्लाफ़ से क्या निस्बते रूहानी है ?

वोह ज़माने में मुअ़ज़्ज़ज़ थे मुसल्मां हो कर
और तुम ख़्वार हुए तारिके क़ुरआं हो कर

तुम हो आपस में ग़ज़ब नाक, वोह आपस में रह़ीम तुम ख़त़ाकारो ख़त़ा बीं, वोह ख़त़ा पोशो करीम
चाहते सब हैं कि हों औजे सुरय्या पे मुक़ीम पहले वैसा कोई पैदा तो करे क़ल्बे सलीम

तख़्ते फ़ग़्फ़ूर भी उन का था सरीर के भी
यूं ही बातें हैं, कि तुम में वोह ह़मिय्यत है भी ?

ख़ुदकुशी शेवा तुम्हारा, वोह ग़यूरो ख़ुद्दार तुम उख़ुव्वत से गुरेज़ां, वोह उख़ुव्वत पे निसार
तुम हो गुफ़्तार सरापा, वोह सरापा किरदार तुम तरसते हो कली को, वोह गुलिस्तां ब कनार

अब तलक याद है क़ौमों को ह़िकायत उन की
नक़्श है सफ़्ह़ए हस्ती पे सदाक़त उन की

मिस्ले बू क़ैद है ग़ुन्चे में, परेशां हो जा रख़्त बरदोश हवाए च-मनिस्तां हो जा
है तुनुक माया, तो ज़र्रे से बियाबां हो जा नग़मए मौज से हंगामए तूफ़ां हो जा

क़ुव्वते इ़श्क़ से हर पस्त को बाला कर दे
दह्‌र में इस्मे मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم *से उजाला कर दे*

अ़क़्ल है तेरी सिपर इ़श्क़ है शमशीर तेरी ! मेरे दरवेश ! ख़िलाफ़त है जहांगीर तेरी
मा सिवा अल्लाह के लिये आग है तक्बीर तेरी तू मुसल्मान है तक़्दीर है तदबीर तेरी

की मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم *से वफ़ा तूने तो हम तेरे हैं*
येह जहां चीज़ है क्या लौह़ो क़लम तेरे हैं

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फ़िरिश्ते उस के लिये इस्तिग़्फ़ार (या'नी बख़्शिश की दुआ) करते रहेंगे । (طبرانی)

जोशे ईमानी का सुबूत दीजिये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आप भी हिम्मत कीजिये और **जोशे ईमानी** का सुबूत देते हुए **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **के महबूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के जां निसार सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان की कुरबानियों को अ़-मली तौ़र पर ख़िराजे तह्सीन पेश करने के लिये **म-दनी क़ाफ़िलों** में सफ़र की निय्यत फ़रमाइये । اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ आप की राहों में कोई कांटे नहीं बिछाएगा, आप पर पथराव नहीं किया जाएगा । आप की राहों में तो लोग आंखें बिछाएंगे ।

लूटने रह़मतें क़ाफ़िले में चलो सीखने सुन्नतें क़ाफ़िले में चलो
क़र्ज़ होगा अदा, आ के मांगो दुआ पाओगे ब-र-कतें क़ाफ़िले में चलो

(वसाइले बख़्शिश, स. 609)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

दाता हुज़ूर की त़रफ़ से म-दनी क़ाफ़िले की ख़ैर ख़्वाही

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! म-दनी क़ाफ़िलों के मुसाफ़िरों पर जो करम नवाज़ियां होती हैं उन की एक झलक आप भी मुला-ह़ज़ा कीजिये और फिर म-दनी क़ाफ़िले में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सफ़र के लिये कमर बस्ता हो जाइये चुनान्चे **इस्लामी भाइयों** का बयान है कि हमारा म-दनी क़ाफ़िला मर्कज़ुल औलिया लाहोर **दाता दरबार** رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه की मस्जिद के अन्दर तीन दिन के लिये क़ियाम पज़ीर था । हम म-दनी क़ाफ़िले के जद्वल के मुत़ाबिक़ सुन्नतों की तरबिय्यत ह़ासिल कर रहे थे, दौराने ह़ल्क़ा एक साहि़ब तशरीफ़ लाए उन्हों ने

आ़शिक़ाने रसूल के साथ बड़ी मह़ब्बत के साथ मुलाक़ात की फिर कहने लगे, اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ आज रात मेरी क़िस्मत का सितारा चमका और **हुज़ूर दाता गन्ज बख़्श अ़ली हिज्वेरी** رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه मुझ गुनहगार के ख़्वाब में तशरीफ़ लाए और कुछ इस त़रह़ फ़रमाया **: "दा'वते इस्लामी** के **म–दनी क़ाफ़िले वाले आ़शिक़ाने रसूल तीन दिन के लिये मेरी मस्जिद में ठहरे हुए हैं लिहाज़ा तुम उन के खाने का इन्तिज़ाम करो ।"** लिहाज़ा मैं म–दनी क़ाफ़िले वालों की ख़ैर ख़्वाही के लिये खाना लाया हूं आप ह़ज़रात क़बूल फ़रमाइये ।

क्या ग़रज़ दर दर फिरूं मैं भीक लेने के लिये — है सलामत आस्ताना आप का दाता पिया
झोलियां भर भर के ले जाते हैं मंगते रात दिन — हो मेरी उम्मीद का गुलशन हरा दाता पिया

(वसाइले बख़्शिश, स. 507)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान को इख़्तिताम की त़रफ़ लाते हुए **सुन्नत** की फ़ज़ीलत और चन्द सुन्नतें और आदाब बयान करने की सआ़दत ह़ासिल करता हूं । ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मुस्त़फ़ा जाने रह़मत, शम्ए बज़्मे हिदायत, नोशए बज़्मे जन्नत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है **:** जिस ने मेरी **सुन्नत** से **मह़ब्बत** की उस ने मुझ से **मह़ब्बत** की और जिस ने मुझ से **मह़ब्बत** की वोह **जन्नत** में मेरे साथ होगा । **(ابنِ عساکر ج۹ ص۳٤۳)**

सीना तेरी सुन्नत का मदीना बने आक़ा
जन्नत में पड़ोसी मुझे तुम अपना बनाना

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : बरोज़े क़ियामत लोगों में से मेरे क़रीब तर वोह होगा जिस ने दुन्या में मुझ पर ज़ियादा दुरूदे पाक पढ़े होंगे। (ترمذی)

"क़त्ए रेहमी हराम है" के 13 हुरूफ़ की निस्बत से सिलए रेहमी के 13 म-दनी फूल

❁ **फ़रमाने इलाही** عَزَّوَجَلَّ : وَاتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِیْ تَسَآءَلُوْنَ بِهٖ وَالْاَرْحَامَ ط[1]

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : "और **अल्लाह** से डरो, जिस के नाम पर मांगते हो और रिश्तों का लिहाज़ रखो।" इस आयते मुबा-रका के तहत "तफ़्सीरे मज़्हरी" में है : या'नी तुम क़त्ए रेहम (या'नी रिश्तेदारों से तअ़ल्लुक़ तोड़ने) से बचो[2] ❁ **7 फ़रामीने मुस्तफ़ा** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم :

﴾1﴿ जो **अल्लाह** और क़ियामत पर ईमान रखता है उसे चाहिये कि **सिलए रेहमी** करे[3] ﴾2﴿ क़ियामत के दिन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के अ़र्श के साए में तीन क़िस्म के लोग होंगे, (उन में से एक है) सिलए रेहमी करने वाला[4] ﴾3﴿ रिश्ता काटने वाला जन्नत में नहीं जाएगा[5] ﴾4﴿ लोगों में से वोह शख़्स सब से अचछा है जो कसरत से कुरआने करीम की तिलावत करे, ज़ियादा मुत्तक़ी हो, सब से ज़ियादा नेकी का हुक्म देने और बुराई से मन्अ़ करने वाला हो और सब से ज़ियादा **सिलए रेहमी** (या'नी रिश्तेदारों के साथ अच्छा बरताव) करने वाला हो[6] ﴾5﴿ बेशक अफ़्ज़ल तरीन स-दक़ा वोह है जो दुश्मनी छुपाने वाले रिश्तेदार पर किया जाए[7] ﴾6﴿ जिस क़ौम में क़ातेए रेहम (या'नी रिश्तेदारी तोड़ने वाला) हो, उस (क़ौम) पर **अल्लाह** की रहमत का नुज़ूल नहीं होता[8] ﴾7﴿ जिसे येह पसन्द हो कि उस के लिये (जन्नत में) महल बनाया जाए और उस के द-रजात बुलन्द किये जाएं, उसे चाहिये कि जो इस पर ज़ुल्म करे येह उसे मुआ़फ़ करे और जो इसे महरूम करे येह उसे अ़ता करे और

مدینہ

۱: پ۴،اَلنّساء:۱ ۲: تفسیرِمظھری ج۲ ص۳ ۳: بخاری ج۴ص۱۳۶ حدیث ۶۱۳۸ ۴: اَلْفِردَوس بمأثور الْخِطاب ج۲ص۹۹حدیث۲۰۲۶ ۵: بُخاری ج۴ ص۹۷ حدیث۵۹۸۴ ۶: مُسندِ اِمام احمد ج۱۰ص۴۰۲حدیث۲۷۵۰۴ ۷: ایضاج۹ص۱۳۸حدیث۲۳۵۸۹ ۸: اَلزَّواجِر ج۲ ص۱۵۳

जो इस से क़त्ए तअ़ल्लुक़ करे येह उस से नाता (या'नी तअ़ल्लुक़) जोड़े (اَلْمُستَدرَك ج۳ص۱۲احديث ۳۲۱۵) ❁ हज़रते सय्यिदुना **फ़क़ीह** अबुल्लैस समर क़न्दी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं, सिलए रेह़मी करने के **10** फ़ाएदे हैं : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा ह़ासिल होती है, लोगों की ख़ुशी का सबब है, फ़िरिश्तों को मसर्रत होती है, मुसल्मानों की त़रफ़ से उस शख़्स की ता'रीफ़ होती है, शैत़ान को इस से रन्ज पहुंचता है, उ़म्र बढ़ती है, रिज़्क़ में ब-र-कत होती है, फ़ौत हो जाने वाले आबाओ अज्दाद (या'नी मुसल्मान बाप दादा) ख़ुश होते हैं, आपस में मह़ब्बत बढ़ती है, वफ़ात के बा'द इस के सवाब में इज़ाफ़ा हो जाता है, क्यूं कि लोग उस के ह़क़ में दुआ़ए ख़ैर करते हैं (تَـنبيـهُ الغـافِلين ص۷۳) ❁ **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 1196 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, "**बहारे शरीअ़त**" जिल्द 3 सफ़ह़ा 558 ता 560 पर है : **सिलए रेह़्म** के मा'ना **रिश्ते को जोड़ना** है या'नी रिश्ते वालों के साथ नेकी और सुलूक करना। सारी उम्मत का इस पर इत्तिफ़ाक़ है कि **सिलए रेह़्म** "वाजिब" है और क़त्ए रेह़्म (या'नी रिश्ता तोड़ना) "ह़राम" है। जिन रिश्ते वालों के साथ सिलए (रेह़्म) वाजिब है वोह कौन हैं ? बा'ज़ उ़-लमा ने फ़रमाया : वोह **ज़ू रेह़्म मह़रम** हैं और बा'ज़ ने फ़रमाया : इस से मुराद ज़ू रेह़्म हैं, मह़रम हों या न हों। और ज़ाहिर येही क़ौले दुवुम है, **अह़ादीस** में मुत़्लक़न (या'नी बिग़ैर किसी क़ैद के) रिश्ते वालों के साथ सिला (या'नी सुलूक) करने का हुक्म आता है, क़ुरआने मजीद में मुत़्लक़न (या'नी बिला क़ैद) ذَوِی الْقُرْبٰی (या'नी क़राबत वाले) फ़रमाया गया मगर येह बात ज़रूर है कि रिश्ते में चूंकि मुख़्तलिफ़

द-रजात हैं (इसी त़रह़) सिलए रेह़्म (या'नी रिश्तेदारों से ह़ुस्ने सुलूक) के द-रजात में भी तफ़ावुत (या'नी फ़र्क़) होता है। वालिदैन का मर्तबा सब से बढ़ कर है, इन के बा'द ज़ू रेह़्म मह़रम का, (या'नी वोह रिश्तेदार जिन से नसबी रिश्ता होने की वजह से निकाह़ हमेशा के लिये ह़राम हो) इन के बा'द बक़िय्या रिश्ते वालों का अ़ला क़-दरे मरातिब। (या'नी रिश्ते में नज़्दीकी की तरतीब के मुत़ाबिक़) (رَدُّالْمُحتار ج۹ص۶۷۸) ❁ **सिलए** रेह़्मी (या'नी रिश्तेदारों के साथ सुलूक) की मुख़्तलिफ़ सूरतें हैं, इन को हदिय्या व तोह़फ़ा देना और अगर उन को किसी बात में तुम्हारी इआ़नत (या'नी इमदाद) दरकार हो तो इस काम में उन की मदद करना, उन्हें सलाम करना, उन की मुलाक़ात को जाना, उन के पास उठना बैठना, उन से बातचीत करना, उन के साथ लुत़्फ़ो मेह़रबानी से पेश आना (دُرَر ج۱ ص۳۲۳) ❁ अगर येह शख़्स परदेस में है तो रिश्ते वालों के पास ख़त़ भेजा करे, उन से ख़त़ो किताबत जारी रखे ताकि बे तअ़ल्लुक़ी पैदा न होने पाए और हो सके तो वत़न आए और रिश्तेदारों से तअ़ल्लुक़ात ताज़ा कर ले, इस त़रह़ करने से मह़ब्बत में इज़ाफ़ा होगा। (رَدُّالْمُحتار ج۹ص۶۷۸) (फ़ोन या इन्टर नेट के ज़रीए़ भी राबित़े की तरकीब मुफ़ीद है) ❁ सिलए रेह़्मी (रिश्तेदारों के साथ अच्छा सुलूक) इसी का नाम नहीं कि वोह सुलूक करे तो तुम भी करो, येह चीज़ तो ह़क़ीक़त में मुकाफ़ात या'नी अदला बदला करना है कि उस ने तुम्हारे पास चीज़ भेज दी तुम ने उस के पास भेज दी, वोह तुम्हारे यहां आया तुम उस के पास चले गए। ह़क़ीक़तन **सिलए रेह़्म** (या'नी कामिल द-रजे का सिलए रेह़्म) येह है कि वोह काटे और तुम जोड़ो, वोह तुम से जुदा होना चाहता है, बे ए'तेनाई (या'नी ला परवाही)

करता है और तुम उस के साथ रिश्ते के हुक़ूक़ की मुराआ़त (या'नी लिह़ाज़ व रिआ़यत) करो। **(ایضًا)**

हज़ारों सुन्नतें सीखने के लिये **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ दो कुतुब (1) **312** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**बहारे शरीअ़त**" हि़स्सा **16** और (2) **120** सफ़ह़ात की किताब "**सुन्नतें और आदाब**" हदिय्यतन ह़ासिल कीजिये और पढ़िये। सुन्नतों की तरबिय्यत का एक बेहतरीन ज़रीआ़ **दा'वते इस्लामी** के **म-दनी क़ाफ़िलों** में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र भी है।

लूटने रह़मतें क़ाफ़िले में चलो   सीखने सुन्नतें क़ाफ़िले में चलो
होंगी ह़ल मुश्किलें क़ाफ़िले में चलो   ख़त्म हों शामतें क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ग़मे मदीना, बक़ीअ़,
मग़्फ़िरत और बे
हि़साब जन्नतुल
फ़िरदौस में आक़ा
के पड़ोस का त़ालिब

5 स-फ़रुल मुज़फ़्फ़र 1435 सि.हि.
9-12-2013

येह रिसाला पढ़ कर दूसरे को दे दीजिये

शादी ग़मी की तक़रीबात, इज्तिमाआ़त, आ'रास और जुलूसे मीलाद वग़ैरा में **मक-त-बतुल मदीना** के शाएअ़ कर्दा रसाइल और म-दनी फूलों पर मुश्तमिल पेम्फ़लेट तक़्सीम कर के सवाब कमाइये, गाहकों को ब निय्यते सवाब तोह़फ़े में देने के लिये अपनी दुकानों पर भी रसाइल रखने का मा'मूल बनाइये, अख़्बार फ़रोशों या बच्चों के ज़रीए अपने मह़ल्ले के घर घर में माहाना कम अज़ कम एक अ़दद सुन्नतों भरा रिसाला या म-दनी फूलों का पेम्फ़लेट पहुंचा कर नेकी की दा'वत की धूमें मचाइये और ख़ूब सवाब कमाइये।

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जब तुम रसूलों पर दुरूद पढ़ो तो मुझ पर भी पढ़ो, बेशक मैं तमाम जहानों के रब का रसूल हूं। (جمع الجوامع)

फ़ेहरिस

उ़न्वान	सफ़्हा	उ़न्वान	सफ़्हा
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	1	मुबल्लिग़ीन की क़ब्रें اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जग-मगाएंगी	13
म-दनी मुन्ने का जोशे ईमानी	2	जन्नत में दाख़िला और गुज़श्ता गुनाहों का कफ़्फ़ारा	14
दुन्या के लिये तो वक़्त है मगर......	5		
चार शहीदों की मां	6	हुसूले दुन्या के लिये सफ़र.......	15
गुफ़्तार के ग़ाज़ी	7	एक त़रफ़ सहाबा का किरदार दूसरी त़रफ़ हम ग़फ़्लत शिआ़र	15
एह़सासे ज़िम्मादारी पैदा कीजिये	10		
म-दनी क़ाफ़िले में शिफ़ा भी मिली और दीदार भी हुवा	11	जोशे ईमानी का सुबूत दीजिये	17
		दाता हुज़ूर की त़रफ़ से म-दनी क़ाफ़िले की ख़ैर ख़्वाही	17
सुल्त़ाने दो जहां صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की कुरबानियां	12		
भलाई की बातें सिखाने की फ़ज़ीलत	13	सिलए रेह़्मी के 13 म-दनी फूल	19

ماخذ و مراجع

کتاب	مطبوعہ	کتاب	مطبوعہ
قرآن مجید	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی	تنبیہ الغافلین	دار الکتاب العربی بیروت
تفسیر مظہری	کوئٹہ	الزواجر	دار المعرفۃ بیروت
بخاری	دار الکتب العلمیۃ بیروت	سعادۃ الدارین	دار الکتب العلمیۃ بیروت
ترمذی	دار الفکر بیروت	التیسیر	مکتبۃ الامام الشافعی عرب
مسند امام احمد	دار الفکر بیروت	درر	باب المدینہ کراچی
المستدرک	دار المعرفۃ بیروت	ردّالمحتار	دار المعرفۃ بیروت
حلیۃ الاولیاء	دار الکتب العلمیۃ بیروت	زلف و زنجیر	شبیر برادرز مرکز الاولیاء لاہور
ابن عساکر	دار الفکر بیروت	حدائق بخشش شریف	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
الفردوس بمأثور الخطاب	دار الکتب العلمیۃ بیروت	وسائل بخشش	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
اسد الغابۃ	دار احیاء التراث العربی بیروت	☆☆☆	☆☆☆

दांत चमकाने का नुस्ख़ा

ख़ुश्क आमले पन्सारी की दुकान से ले कर पिसवा कर पाउडर बना कर शीशी में महफ़ूज़ कर लीजिये, रोज़ाना सुब्ह व शाम उंगली से दांतों को इस से ख़ूब मांझिये । दांत चमकदार होंगे, ख़ून आता हो तो वोह भी बन्द होगा और दांत ख़ूब मज़बूत हो जाएंगे ।

اِنْ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ

मक-त-बतुल मदीना®
दा'वते इस्लामी
फ़ैज़ाने मदीना, त्री कोनिया बग़ीचे के सामने, मिरज़ापूर, अहमदआबाद-1, गुजरात, इन्डिया
Mo.091 93271 68200 E-mail : maktabaahmedabad@gmail.com www.dawateislami.net